

उस रात पॉटी को इंतज़ार करना पड़ा

CooCubby · हिन्दी · The Night the Potty Waited



कब्बी टावर बनाने में लगा है।

कब्बी पूरे घर का सबसे ऊँचा टावर बना रहा था। एक ब्लॉक, फिर एक, फिर एक। उसका रुकने का मन ही नहीं था।



कुलबुल-कुलबुल? अभी नहीं!

उसके पेट में हुआ कुलबुल-कुलबुल। कब्बी बोला, “अभी नहीं, कुलबुल! बस एक ब्लॉक और।”



ओह-ओह! सूसू निकल गई।

ओह-ओह! कारपेट पर गरम-गरम सूसू फैल गई थी। कब्बी का होंठ काँपने लगा।



पापा बेयर नाराज़ नहीं हैं।

पापा बेयर आए। उनकी आवाज़ से लग रहा था कि उन्हें नींद आ रही है। “कभी-कभी सूसू निकल जाती है, बेटा। चलो, कपड़े बदलें और तुम्हें सुखा दें।”



सूखे कपड़े अच्छे लगते हैं।

कब्बी ने सूखी पैंट पहनी। उस पर छोटे-छोटे स्टार बने थे। “सूखे कपड़े अच्छे लगते हैं,” उसने कहा। पापा बेयर ने सिर हिलाया।



डिली को एक आइडिया आया।

नन्ही बत्तख डिली ने अंदर झाँका। “जब पेट में कुलबुल हो, तो खेल रोककर पॉटी पर जाओ। टावर आधा बना हो, तब भी!”



ब्लॉक, ब्लॉक, कुलबुल!

कब्बी फिर टावर बनाने लगा। एक ब्लॉक, फिर एक... कुलबुल! इस बार उसने ब्लॉक नीचे रख दिया। “पॉटी टाइम!”



पॉटी में सूसू, टप-टप!

टप-टप! सूसू सीधा छोटी हरी पॉटी में। कब्बी इतना खुश होकर मुस्कुराया कि उसके कान भी ऊपर उठ गए।



अब तक का सबसे ऊँचा टावर!

कब्बी वापस खेलने गया। टावर बढ़ते-बढ़ते पापा बेयर के घुटनों से भी ऊँचा हो गया। इस बार किसी को खेल रोककर सूसू पोंछनी नहीं पड़ी।



कोशिश करते-करते हम बड़े होते हैं।

सोने के टाइम पापा बेयर बोले, “कोशिश करते-करते ही हम बड़े होते हैं।” कब्बी ने जम्हाई ली। “कल मैं फिर कोशिश करूँगा।” और उसने की भी।



CooCubby

Free picture stories for little ones, in 8 Indian languages

coocubby.com